भारत–तिब्बत सम्बन्ध
(700–1200 A.D.)

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
में
पी-एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध
की
संक्षेपिका

निर्देशक :
डा० बिनोद चन्द्र सिन्हा
एम०ए०, पी०एच०-डी०
अवकाश प्राप्त प्रोफेसर
(एक्स नेशनल फेलो, यू०जी०सी०)

शोधार्थी :
ऋचा शंकर

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
1992

भारत–तिब्बत सम्बन्ध
(700–1200 A.D.)

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
में
पी-एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

की
संक्षेपिका

निर्देशक :
डा0 विनोद चन्द्र सिन्हा
एम०ए०, पी०एच०-डी०
अवकाश प्राप्त प्रोफेसर
(एक्स नेशनल फेलो, यू०जी०सी०)

शोधार्थी :
ऋचा शंकर

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
1992

विषय - सूची

भारत - तिब्बत सम्बन्ध
(700-1200 A.D.)

सं क्षे पि का

तिब्बत भारत का एक पड़ोसी देश है, जो केवल भौगोलिक सामीप्य के आधार पर ही नहीं अपितु सम्बन्धों की प्रगाढ़ता की दृष्टि से भी, प्राचीन काल से ही भारत के बहुत निकट रहा । यह एक एसा देश है जो भारतीय धर्म, साहित्य व कला के रंग में रंगा हुआ है । भारत के साथ तिब्बत के सम्बन्धों का इतिहास नया नहीं है, इसका जन्म तो महाभारत काल में ही हो चुका था, परन्तु सातवीं शताब्दी के आरम्भ में इस सम्पर्क ने एक व्यवस्थित, संगठित व बहुपक्षीय रूप लिया, जिसमें मूर्धन्य स्थान पर बौद्ध धर्म, तिब्बती लिपि का भारत में निर्माण, औषधि, तंत्र कला व वास्तु आदि के क्षेत्र हैं ।

भारत और तिब्बत, इन दोनों देशों के सम्बन्ध का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत होने के कारण यह मात्र रोचक ही नहीं अपितु बड़ा उपयोगी भी है क्यूंकि यह सम्बन्ध किसी तलवार की नोंक अथवा उपनिवेश स्थापना के भौतिक उद्देश्य पर न टिक कर धर्म व संस्कृति की मृदुल छाया के नीचे पनपे हैं जिसकी छटा आज भी दृष्टिगोचर होती हैं । अपने अध्ययन काल में बृहत्तर भारत का अध्ययन करते हुये तिब्बत में भारतीय संस्कृति के प्रवेश व प्रसार बहुत रोचक और महत्वपूर्ण प्रतीत हुआ अतएव भारत और तिब्बत के सम्बन्धों के अध्ययन को ही मैने अपना शोध का विषय चुना । वैसे भी हिन्दी भाषा में इस विषय पर अत्यन्त अल्प कार्य हुआ है, आंग्ल भाषा में तो तिब्बत पर काफी काम हुआ है, किन्तु भारत और तिब्बत के सम्बन्धों की दृष्टि से वे बहुत कम जानकारी देने मे समर्थ थे । अतएव मैने यह निश्चय किया कि उपरोक्त भाषाओं के ग्रन्थों का विश्लेषण करके शोध कार्य किया जाय, कुछ नवीन व्याख्याएं प्रस्तुत की जांय और छूटे हुये क्षेत्र को अधिक प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जाय, जिससे भारत और तिब्बत के सम्पर्कों के महत्वपूर्ण व बहुपक्षीय स्वरूप उभरकंर स्पष्ट रूप से प्रतिलक्षित हो सके।

ठोस प्रमाणों के आधार पर दोनों देशों के सम्पर्कों का सिलसिला सातवीं शताब्दी में आरम्भ हुआ परन्तु कुछ प्राचीन ग्रन्थों जैसे महाभारत, पौराणिक ग्रन्थ, रघुवंश, अभिज्ञानशाकुन्तलम, में यत्र तत्र विकीर्ण प्रसंग इस सम्बन्ध स्थापना के इतिहास को और पीछे ढकेल देते हैं । वैसे सातवीं शताब्दी में तिब्बती सम्राट स्त्रोग-सेन-गम्पो द्वारा भारत में अपने एक शिष्टमंडल को लिपि निर्माण व बौद्ध धर्म ग्रन्थों को लाने के उद्देश्य से भेजने के साथ ही स्पष्ट रूप से इस सम्पर्क का श्रीगणेश हुआ । तत्पश्चात तो भारत से तिब्बत जाने वाले धर्मप्रचारकों तथा तिब्बत से भारत विद्या ग्रहण करने के उद्देश्य से आने वाले लोगों का तांता सा बंध गया एवं सम्बन्धों में अधिक प्रगाढ़ता आ सकी । यह सिलसिला बारहवीं शती तक तो बहुत ही उन्नत रूप में फला फूला । एक प्रकार से कहा जाय तो सातवीं शताब्दी से बारहवीं शती का काल न केवल तिब्बती इतिहास का बल्कि भारत से इसके सम्बन्धों की दृष्टि से भी स्वर्णकाल था । यह वह समय था जब तिब्बत ने ज्ञान, धर्म व सभ्यता के क्षेत्रों में भारत से बहुत कुछ सीखा व अपनाया । दोनों देश एक दूसरे के बहुत निकट आ सके और परस्पर सौहार्द को, बढ़ावा मिला । आज दोनों के मध्य सम्बन्धों की जो प्रगाढ़ता दिखाई देती है वह प्राचीन काल से चलते आ रहे मधुर सम्पर्कों का ही सफल परिणाम है । चीन के आक्रमण के बाद तिब्बत के दलाई लामा के साथ अनेकों तिब्बतियों का भारत में शरण लेना इसका सशक्त परिचायक है ।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से भारत व तिब्बत के सम्बन्धों पर आधारित इस शोध प्रबन्ध को छः अध्यायों में वर्गीकृत किया गया है । प्रथम अध्याय 'स्त्रोत' है, इसके अन्तर्गत शोध विषय से सम्बन्धित प्रमुख स्त्रोतों का वर्णन किया गया है, इसमें दो प्रकार के साक्ष्य है, साहित्यिक एवं पुरातात्विक । साहित्यिक के अन्तर्गत धार्मिक व ऐतिहासिक ग्रन्थ आते हैं, जिनमें से मुख्य तिब्बती रामायण, महाभारत, अभिज्ञानशाकुन्तलम् रघुवंश आदि है । इनमें तिब्बत का 'त्रिविष्टिप' के नाम से उल्लेख है और समय-समय पर भारतीय राजाओं आदि के वहाँ जाने का उल्लेख हैं । पुरातात्विक स्त्रोतों में तिब्बत में भारतीय वास्तु के नमूने पर निर्मित सम-ये व साक्या विहार आदि आते हैं ।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक पृष्ठ भूमि है । इसके अन्तर्गत तिब्बत की विभिन्न दशाओं भौगोलिक, राजनैतिक, सामाजिक व धार्मिक का वर्णन है । तिब्बत समुद्रतल से 10,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित, एक ठंडा व शुष्क जलवायु वाला देश है । भौगोलिक निकटता होने पर भी पहाड़ों व रास्तों की अन्य दुर्गमताओं के कारण भारत से इसका सम्पर्क स्पष्ट से सातवीं शताब्दी में आरम्भ हो सका । 630 ई0 में सम्राट स्त्रोंग सेन गम्पो के राज्यारूढ होने के बाद से तिब्बत की राजनैतिक अवस्था सुचारू रूप में आई । तब ही यहाँ इसके प्रयत्नों के फलस्वरूपभारत से बौद्ध धर्म का प्रसार आरम्भ हुआ । यहाँ का समाज धर्म से बहुत प्रभावित है । तिब्बत के प्राचीन धर्म बोन था। तांत्रिक गतिविधियों का भी यहाँ के बौद्ध धर्म पर पर्याप्त प्रभाव है । उपरोक्त अध्याय में तिब्बत की विभिन्न दशाओं के वर्णन के साथ-साथ उसमें व्याप्त कई भारतीय समताओं को भी उभारने का प्रयत्न किया गया है ।

तृतीय अध्याय 'तिब्बत-भारत सम्बन्ध स्थापना के प्रेरक तत्व है। इसमें मुख्य रूप से भारतीय पंडितों की धर्मप्रसार की अभिलाषा एवं इस क्षेत्र में उनके द्वारा दिये गये अपूर्व योगदान की चर्चा की गयी है। प्राचीन काल में अपना देश छोड़कर दूसरे देशों में धर्म व संस्कृति का प्रसार करना ,अपने बान्धवों से दूर परदेस में लम्बे समय तक अपने अभियान की सफलता पूर्वक पूर्ति के लिये संघर्षरत रहना वास्तव में अत्यन्त कठिन कार्य था । तिब्बत में अनेक भारतीय पंडितो ने इस प्रकार चुनौतियें को स्वीकार किया जि सर्वप्रमुख आचार्य शान्तरक्षित, पद्मसम्भव, स्मृति, अतिशा आदि थे ।

चतुर्थ अध्याय में तिब्बत में 'बौद्ध धर्म का प्रवेश व प्रसार' का विस्तृत वर्णन निहित है, इसमें उन पहलुओं को विशेष रूप से उजागर करने का प्रयत्न किया गया है जिनके माध्यम से तिब्बत भारत के समीप आ सका । अनेको भारतीय मनीषियों के तिब्बत में धर्म तथा संस्कृति के प्रसारार्थ जाने व बड़ी संख्या में तिब्बतियों का भारत में धर्म व तंत्र की शिक्षा के लिये भारत आने का वर्णन है ।

भारत में तिब्बती लिपि का ब्राह्मी लिपि के आधार पर निर्मित होना व आज भी उसी लिपि का तिब्बतियों में प्रचार आदि विषय बृहद् रूप से प्रस्तुत करने की चेष्टा की गयी है ।

पंचम अध्याय 'तिब्बत में बौद्ध कला व साहित्य' है । इसका परिवेश अत्यन्त विस्तृत है, यह मूर्ति कला, वास्तुकला, तंत्र साहित्य, शिक्षा प्रणाली आदि अनेक महत्वपूर्ण विषय अपने में संजोए हुए है, जिनसे भारत और तिब्बत के सम्बन्धों का विषय और अधिक विकसित व सौहार्दपूर्ण ढंग से उभरकर सामने आता है । इसके माध्यम से ज्ञात होता है कि, दोनों देशों के सम्पर्कों की सीमा मात्र बौद्ध धर्म तक नहीं आती अपितु वह समय के साथ बहुपक्षीय हो गये । तिब्बत में उदन्तपुरी विश्वविद्यालय के आधार पर सम-ये विहार बनाया गया । इन्होने भारतीय आधार पर ही बुद्ध, वज्रधारा, तारा, जम्भाला, मंजू श्री आदि की मूर्तियां बनाई । तंत्र के क्षेत्र में भी अनेक क्रियाएं भारतीय ही अपनाई गई क्यूंकि सातवीं शताब्दी तक बौद्ध धर्म में तंत्र का प्रवेश हो चुका था और तिब्बती आरम्भ से ही जादू टोन से प्रभावित होने वाली प्रवृत्तियों से युक्त थे । अतः इन्होंने भरपूर तरीके से भारतीय तंत्र की शिक्षा प्राप्त थी । औषधि विद्वान के क्षेत्र में भी दोनों में बहुत समता है, विशेषकर शरीर विज्ञान, धातु दोषों तथा उपचार के तरीकों में । तिब्बत में भारत की साहित्य ने तो प्रवेश पाया ही साथ ही विहारों में भी भारतीय शिक्षा प्रणाली अपनाई गई जो बीसवीं शती में भी अपने उसी प्राचीन रूप में विद्यमान है । इस अध्याय में दोनों देशों के मध्य विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित हुये सम्बन्धों की विस्तार से वर्णन किया गया है ।

षष्टम अध्याय 'उपसंहार' है, इसके अन्तर्गत शोध विषय की समीक्षा की गई है, अध्ययन के फलस्वरूप जो महत्वपूर्ण नवीन तथ्य उभरकर सामने आते हैं उनका विस्तृत विवेचन करने का प्रयत्न किया है ।

TIBET : POLITICAL AND ETHNOGRAPHIC



(Based on H.E. Richardson, 1962)

TIBET : POLITICAL AND ETHNOGRAPHIC



(Based on H.E. Richardson, 1962)